

कार्यकारी सारांश

1. हमने यह निष्पादन लेखापरीक्षा क्यों की?

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के वर्ष 1992 के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन संख्या 14 तथा वर्ष 2005 की लेखापरीक्षा प्रतिवेदन की संख्या 6 के पैरा संख्या 3.1 में आर्मी बेस वर्कशॉपों की पुनरीक्षण पर टिप्पणी की गई थी। प्रतिवेदनों में दर्शाए गए प्रमुख मुद्दों में वर्कशॉपों का प्रगतिशील उन्नयन, मरम्मत योग्य उपकरण की अनुपलब्धता के कारण संपूर्ण रूप से मौजूद क्षमताओं का उपयोग में नहीं लाया जाना, पुर्जों की अनुपलब्धता तथा लागत लेखा पद्धति को क्रियान्वित नहीं किया जाना समाहित था।

यह निष्पादन लेखापरीक्षा “आर्मी बेस वर्कशॉपों का कार्यचालन”, ओवरहाल की समयोपरिता, ओवरहाल के लिए आधारभूत संरचना की पर्याप्तता, पुर्जों मात्रा की समयोपरि उपलब्धता तथा मरम्मत किए गए उपकरण की गुणवत्ता आदि के संबंध में वर्कशॉपों की प्रभावकारिता को निर्धारित करने के लिए की गई है। पहले किए पुनरीक्षण पर मंत्रालय द्वारा की गई कार्रवाई की टिप्पणियों में दिए गए आश्वासनों की स्थिति को भी इस निष्पादन लेखापरीक्षा के दौरान देखा गया था।

2. प्रमुख निष्कर्ष

सेना में आठ आर्मी बेस वर्कशॉप हैं, जिनमें से सात उपकरण/शस्त्रों की मरम्मत तथा ओवरहाल के कार्य करने के लिए जिम्मेवार है और एक वर्कशॉप को पुर्जों के स्वदेशीकरण तथा उसके निर्माण की जिम्मेवारी सौंपी गई है। यह निष्पादन लेखापरीक्षा 2010-11 से 2015-16 तक की छह वर्षों की अवधि को आवरित करती है। इन आठ आर्मी बेस वर्कशॉपों में से पाँच अर्थात् 505 एबीडब्ल्यू, नई दिल्ली, 509 एबीडब्ल्यू, आगरा, 510 एबीडब्ल्यू मेरठ, 512 एबीडब्ल्यू, किरकी को उपकरणों की भारतीय सेना के लिए क्रिटिकैलिटी के आधार पर तथा 515 एबीडब्ल्यू, बंगलुरु जो कि पुर्जों के निर्माण के लिए एकमात्र कार्यशाला है, का लेखापरीक्षा के लिए चयन किया गया था।

लड़ाकू उपकरण के ओवरहाल का बँकलॉग

भारतीय सेना के पास बहुतायत में शस्त्र प्रणाली तथा उपकरण की इन्वैन्टरी हैं, जिनका सामरिक सुसज्जता के लिए रखरखाव तथा बनाए रखना आवश्यक है। उपकरण के ओवरहाल का आवर्तन, अनुरक्षण फिलॉसॉफी तथा उपकरण के कल्पित जीवनचक्र के आधार पर निर्धारित होता है। इस नीति को सेना में उपकरण को शामिल करते समय बनाया जाता है।

- टैंक टी-72 के मामले में, ओवरहाल के बँकलॉग की मात्रा 2010-11 के अंत में 713 से 2015-16 के अंत तक 479 तक घट गई जो कि कुल धारण किए गए उपकरणों के लगभग 20 प्रतिशत बनती है।
- बीएमपी-II तथा वीएमपी-II के टैंकों तथा आर्मर्ड रिकवरी वाहन अर्थात् एआरवी डब्ल्यूझेड टी-2, के मामले में भी इस अवधि के दौरान ओवरहाल का बँकलॉग कम हुआ जो कि बहुत ही न्यून था। 802 बीएमपी जो कुल धारित उपकरण के 33 प्रतिशत बनता है तथा 200 एआरवी डब्ल्यूझेड टी-2 जो कि, कुल धारित उपकरण के 90 प्रतिशत बनता है, ओवरहाल के लिए देय थे जिससे इस हद तक प्रचालन के लिए फ्लीट की प्रभावपूर्ण उपलब्धता कम हो गई।

(पैराग्राफ 2.3)

सिग्नल उपकरण के ओवरहाल बँकलॉग

हमने रडार फ्लाय कॅचर के 18 प्रतिशत, रडार टीसी रिपोर्टर के 34 प्रतिशत तथा युद्ध क्षेत्र निगरानी रडार के 21 प्रतिशत में पहले ओवरहाल के बँकलॉग को देखा। इसके अलावा, रडार फ्लाय कॅचर के दूसरे ओवरहाल में 25 प्रतिशत का बँकलॉग देखा गया।

(पैराग्राफ 2.3.1)

श्रेणी 'बी' वाहनों - स्कॅनिया, टाट्रा तथा क्राज़ के लिए ओवरहाल पॉलिसी का न होना

स्कॅनिया, क्राज़ 255 बी/बी1 तथा टाट्रा टी-815 के लिए मुख्यालय बेस वर्कशॉप ग्रुप (बीडब्ल्यूजी) तथा संबंधित वर्कशॉप के पास कोई ओवरहाल पॉलिसी उपलब्ध नहीं थी। वर्तमान में, ईएमई निदेशालय के निर्देशों के अनुसार बेस वर्कशॉप आठ वर्ष पुराने या उससे ऊपर के वाहनों को ओवरहाल के लिए स्वीकार कर रहे हैं।

(पैराग्राफ 2.7.1)

एमबीटी अर्जुन की मरम्मत/ओवरहाल के लिए सुविधाओं का अभाव

2004-05 से सेना में 124 एमबीटी अर्जुन टैंको को शामिल किया गया था। 2020-21 से यह टैंक ओवरहाल के लिए देय है। इस उपकरण के शामिल होने के समय 69 प्रतिशत घटक आयातित थे। दो एजन्सीज़ कॉम्बेंट वाहन अनुसंधान विकास संस्थापन (सीवीआरडीई) तथा भारी वाहन फॅक्टरी (एचवीएफ), स्वदेशीकरण तथा आयात के माध्यम से फ्लीट के आयुचक्र के दौरान उसे बनाए रखने के लिए आवश्यक घटकों को प्रदान करने के लिए जिम्मेवार थे। तथापि, सीवीआरडीई की आवश्यक घटक के स्वदेशीकरण करने में असफलता के कारण, एचवीएफ पुर्जों की आपूर्ति नहीं कर पाया। सहायक पुर्जों की गैर-मौजूदगी में एमबीटी अर्जुन 2013 के बाद से परिचलन में नहीं रह पाया।

(पैराग्राफ 3.2.4)

एबीडब्ल्यू द्वारा हासिल किए गए लक्ष्यों का परिमाण

- 505 एबीडब्ल्यू में 2010-11 से 2015-16 की अवधि दौरान टैंक टी-72 के ओवरहाल मूल लक्ष्यों के अनुसार 60 से 83 प्रतिशत के बीच रहा, सिर्फ 2011-12 को छोड़कर, जहाँ 50 टैंक के ओवरहाल लक्ष्य के स्थान पर 10 टैंक ही ओवरहाल हुए थे। टी-72 के इंजिन के संबंध में भी, 2011-12 को छोड़कर, जो एक खराब वर्ष रहा, जहाँ 100 उपकरण के मूल लक्ष्य के सामने सिर्फ सात इंजिनों का ही ओवरहाल हुआ था, अन्य वर्षों के दौरान की कामयाबी 30 (60 प्रतिशत) से प्रभावी ओवरहाल 100 प्रतिशत (2015-16 के दौरान 100 प्रतिशत) के बीच रहा। हालाँकि, 2015-16 के दौरान टैंक टी-72 के ओवरहाल का बैंकलॉग 479 था जो कि 2010-11 के 713 टैंक टी-72 ओवरहाल के बैंकलॉग के मुकाबले कम हुआ।
- 512 एबीडब्ल्यू में, हालाँकि बीएमपी के संबंध में मूल लक्ष्यों के देखते हुए हासिल किए गए लक्ष्य में गिरावट पायी गई जो कि 13 से 62 प्रतिशत रही, परंतु 2013-14 तथा 2014-15 इन दो वर्षों के दौरान ओवरहाल किए बीएमपी की संख्या 104 (लक्ष्य के 85 प्रतिशत से ज्यादा) तथा 106 (लक्ष्य के लगभग 70 प्रतिशत से ज्यादा) देखी गई। एआरवी डब्ल्यूझेड टी-2 के संबंध में हासिल किया गया लक्ष्य 222 के सम्मुख मात्र 22 ही था। 2015-16 के दौरान ही यह उपलब्धि दो अंक वाले आँकड़े (13) तक पहुँच पायी अन्यथा पिछले वर्षों में 02 से 10 के बीच के लक्ष्य के सामने, यह संख्या 0 से 03 के बीच रही। युटीडी-20 इंजिन के संबंध में ओवरहाल के लक्ष्य को हासिल करने की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी पायी गई क्योंकि 2010-11 से 2015-16 के दौरान समग्र रूप में उपलब्धि मूल लक्ष्य से 77 प्रतिशत से ऊपर रही।
- 509 एबीडब्ल्यू में मूल लक्ष्यों की तुलना में हासिल किए गए लक्ष्यों में गिरावट देखी गई जो कि रडार फ्लाय कैंचर में लगभग 50 प्रतिशत और रडार टीसी रिपोर्टर में लगभग 60 प्रतिशत थी। जनसेट 30 केवीए के संबंध में, मूल लक्ष्यों के सामने 2010-11 से 2015-16 के दौरान गिरावट देखी गई जो शून्य (2010-11) से 2014-15 के दौरान 62 प्रतिशत रही। युद्ध क्षेत्र निगरानी रडार (मध्यम दूरी) के मामले में, 2011-13 के दौरान यह गिरावट न्यून देखी गई।
- 510 एबीडब्ल्यू अभियांत्रिकीय उपकरण के प्रकार तथा विशेष वाहनों के ओवरहाल का कार्य करता है। 510 एबीडब्ल्यू सामान्यतः बेहतरीन कार्य करने वाले के रूप में उभरकर सामने आया है, सिर्फ 2014-15 को छोड़कर, जहाँ हेवी रिकवरी वाहन अर्थात् एचआरवी एवी 15 के ओवरहाल में, यह

मूल लक्ष्यों के सम्मुख मात्र 10 प्रतिशत ही देखा गया था। 2015-16 के दौरान यह कार्य पूर्णतः सराहनीय था।

(पैराग्राफ 2.4.1,2.5.1,2.6,2.7)

ओवरहाल में असामान्य विलंब

153 दिनों के मानदंड के सामने, बीएमपी के ओवरहाल में असामान्य विलंब हुआ तथा एबीडब्ल्यू ने ओवरहाल के लिए लगभग 1512 दिनों तक का समय लिया। उसी प्रकार, टैंक टी-72 के लिए 144 दिनों के मानदंड के सामने यह विलंब लगभग 836 दिनों के बीच रहा। बीएमपी के प्रत्येक यूटीडी-20 इंजन के ओवरहाल हेतु लिया गया औसतन समय 308 दिनों का था जो कि 30 दिनों के निर्धारित समय साँचे का 10 गुना था। रडार तथा उसके विभिन्न प्रकार के ओवरहाल में भी 921 दिनों तक की देरी देखी गई।

(पैराग्राफ 2.4.2, 2.5.2, 2.6.1)

बीएमपी के ओवरहाल के लिए न्यून गुणवत्ता इन्डेक्स

ओवरहाल किए गए बीएमपी के लिए गुणवत्ता इन्डेक्स (क्यूआई) 95 होना चाहिए। हमने देखा कि, हासिल किए गए क्यूआई बहुत ही कम था। 2015-16 के दौरान क्यूआई पिछले वर्षों से अपेक्षाकृत बहुत अच्छा होने पर भी बीएमपी के लिए क्यूआई 70.28 तथा 77.4 के बीच रहा।

(पैराग्राफ 2.5.4)

युनिटों को ओवरहाल किए गए उपकरण के प्रेषण में विलंब

ओवरहाल के बँकलॉग तथा विलंब को आगे सेना मुख्यालय द्वारा निर्गत आदेशों को देरी से जारी करने तथा आयुध डिपो द्वारा उपकरण के प्रेषण में विलंब ने और अधिक जटिल कर दिया था। यह विलंब मुख्यतः, इन कार्यों को करने के लिए कोई लिखित मानदंड तथा समय साँचे की गैर-मौजूदगी के कारण हुआ।

(पैराग्राफ 2.4.3, 2.5.3, 2.6.2)

एबीडब्ल्यू में टेस्टिंग सुविधाओं की अनुपलब्धता

मूल उपकरण निर्माणकर्ता (ओईएम) की सिफारिशों के अनुसार, ओवरहाल किए गए गनों की टेस्ट फायरिंग एक अनिवार्य आवश्यकता थी। एबीडब्ल्यू द्वारा बीएमपी तथा टैंक टी-72 को प्रयोक्ता युनिट को उपकरण की टेस्ट फायरिंग के बगैर ही जारी कर दिया गया था क्योंकि, यह आवश्यक टेस्ट सुविधा एबीडब्ल्यू में मौजूद नहीं थी। वर्कशॉप में उभयचर क्षमता, जो कि बीएमपी की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, को डिप टेस्टिंग सुविधा की अनुपस्थिति में ओवरहाल किए गए बीएमपी के संबंध में जाँच नहीं की गई।

(पैराग्राफ 2.4.5,2.9.4)

515 एबीडब्ल्यूके कार्य आदेशों के कार्यान्वयन में असामान्य विलंब

515 एबीडब्ल्यू का प्राथमिक कार्य है भारतीय सेना के पास रखे गए विभिन्न उपकरण के लिए पुर्जों का निर्माण तथा स्वदेशीकरण का कार्य करना। एबीडब्ल्यू, निर्धारित समय सीमा के भीतर रखे गए “ऑपरेशनल इमीडिएट” वर्गीकरण के कार्य आदेशों में से मात्र 27 प्रतिशत को ही पूरा कर पाया। कुछ मामलों में, 12 महीनों की रखी गई समय सीमा के बजाय लिया गया समय लगभग 93 महीनों तक का था जिसने सामरिक तात्कालिकता को ही विफल कर दिया। वरीयता कार्य आदेशों के विषय में, समय साँचे के भीतर कार्य पूरा करने का प्रतिशत मात्र 65 ही था।

(पैराग्राफ 2.8.2)

लागत लेखा पद्धति का मौजूद न होना

मंत्रालय द्वारा जारी दिशा-निर्देश यह विनिर्दिष्ट करता है कि वाहन तथा इंजन के ओवरहाल की लागत किसी भी हाल में नए वाहन/इंजन की लागत के 30 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। इसके बावजूद, मरम्मतों तथा ओवरहालों की लागत की प्रभावशालिता को निश्चित करने के लिए, एबीडब्ल्यू में कोई लागत लेखा पद्धति मौजूद नहीं थी।

(पैराग्राफ 2.9)

ओवरहाल सुविधाओं की निर्मिती में असामान्य विलंब

- एआरवी डब्ल्यूझेडटी-2 के ओवरहाल की सुविधा मार्च 2009 में उसके शामिल होने के 28 वर्षों के पश्चात बनाई गई। यह वाहन 1996-97 से ही ओवरहाल के लिए देय था, परंतु 222 की कुल क्षमता के सामने मात्र 22 एआरवी डब्ल्यूझेडटी-2 का ही ओवरहाल किया जा सका। इस उपकरण को 2018 से हटाए जाने की संभावना थी।
- घटक स्तरीय मरम्मत (सीएलआर) परियोजना की शुरुआत तथा संस्वीकृति में विलंबों के कारण, न सिर्फ परियोजना की लागत 2004 में ₹ 287 करोड़ से 2011 में ₹ 1835 करोड़ तक बढ़ गई बल्कि, टैंक टी-90 के फर्स्ट मीडियम रिपेयर जो 2012 में देय था, वह भी बकाया रहा।
- 512 एबीडब्ल्यू में अतिरिक्त सुविधाओं को स्थापित करने हेतु, बीएमपी II/ IIके के लिए संचार तथा रात्री दृष्टि संयंत्रों की मरम्मत/ओवरहाल के लिए एक न्यूक्लियस के रूप में ट्यूलिप परियोजना की 2003 में ₹ 22.54 करोड़ की लागत पर मंत्रालय द्वारा मंजूरी दी गई। इस परियोजना को तेरह वर्षों के पश्चात भी पूरी तरह से कार्यान्वित किया जाना अभी बाकी था।

(पैराग्राफ 3.2.1,3.2.3,3.3)

पूफ फायरिंग के लिए निर्मित शूटिंग गैलरी का इस्तेमाल न होना

नवम्बर 2013 में ₹ 6.53 करोड़ की लागत पर निर्मित की गई शूटिंग गैलरी को विद्युतिय एवं पानी की व्यवस्था न होने के कारण 512 एबीडब्ल्यू (मई 2016) द्वारा नहीं लिया जा सका। इसके अलावा, 512 एबीडब्ल्यू ओवरहाल की गई गन की टेस्ट फायरिंग करने के लिए आवश्यक गोला बारूद के लिए प्राधिकृत नहीं था।

(पैरा 3.4)

क्रिटिकल पुर्जों की अनुपलब्धता के कारण विचलन संस्वीकृति को बढ़ावा मिलना

आयुध के मास्टर जनरल (एमजीओ) द्वारा 398 ओवरहाल किए गए बीएमपी तथा 179 टैंक-72 के लिए विचलन संस्वीकृति प्रदान की गई थी। यह क्रिटिकल पुर्जों एवं एसेम्बलियों की अनुपलब्धता की वजह से आवश्यक हो गया था। व्हिजन यंत्र, संचार सेट, ट्रकों इत्यादी के लिए विचलन प्रदान किए गए जिसने बीएमपी एवं टैंक टी-72 के निष्पादन को प्रभावित किया।

(पैरा 4.2)

3. मुख्य सिफारिशें

1. सेना में श्रेणी 'ब' के वाहनों के ओवरहाल की पॉलिसी की गैर-मौजूदगी में, इन वाहनों का ओवरहाल प्रत्येक की स्थिति के आधार पर वर्कशॉप द्वारा किया जाता है। मंत्रालय इन श्रेणी 'ब' के वाहनों के ओवरहाल के लिए पॉलिसी को सूत्रबद्ध करे।
2. चूँकि 2020-21 से एमबीटी अर्जुन ओवरहाल के लिए देय है, मंत्रालय को एमबीटी अर्जुन के घटकों के स्वदेशी विकास तथा मरम्मत और ओवरहाल सुविधाओं के बारे में गौर करना चाहिए और उसमें तेज़ी भी लानी चाहिए।
3. चूँकि, वर्कशॉप द्वारा ओवरहाल किए गए टी-72 तथा बीएमपी टैंकों की कुछ विशिष्ट टेस्ट जैसे पूफ फायरिंग तथा डिप टेस्टिंग किए बिना ही उपकरण युनिटों को निर्गत करने का गंभीर प्रभाव इसकी सामरिक तथा गुणवत्ता पर पड़ता है, इसलिए संबंधित वर्कशॉप में इन टेस्ट सुविधाओं का निर्माण किया जाना आवश्यक है। सेना मुख्यालय को 512 एबीडब्ल्यू में शूटिंग गैलरी के प्रचालन एवं ओवरहाल किए गए गन की टेस्ट फायरिंग के लिए गोलाबारूद के आवश्यक प्राधिकरण में शीघ्रता लानी चाहिए।
4. टी-90 टैंकों की मरम्मत सुविधा को सहायता प्रदान करने के लिए मंत्रालय को घटक स्तरीय मरम्मत (सीएलआर) परियोजना में शीघ्रता लाना चाहिए।
5. दृष्टि संयंत्रों का ओवरहाल अब ऑप्टो-इलेक्ट्रानिक्स फॅक्टरी(ओएलएफ), देहरादून में किया जा रहा है क्योंकि, बीएमपी के दृष्टि संयंत्रों के संपूर्ण आवश्यक घटकों के ओवरहाल की जिम्मेवारी को उन्होंने स्वीकार किया है। इस विकास प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए, मंत्रालय 512 एबीडब्ल्यू में अतिरिक्त

- सुविधाओं की स्थापना हेतु ट्यूलिप परियोजना की व्याप्ति तथा क्रियान्वयन का पुनरीक्षण कर सकती है।
6. लागत लेखा पद्धति को वर्कशाप में लागू किया जाए ताकि स्रोतों अर्थात मानवशक्ति, मशीन एवं सामग्रियों आदि के अधिकतम प्रयोग को सुनिश्चित किया जा सके तथा ओवरहाल की लागत प्रभावशालिता का आकलन हो सके।
 7. पुर्जों की उपलब्धता को बढ़ाने की अत्यावश्यकता के संबंध में, पुर्जों की उपलब्धता में आने वाले अवरोधों को पहचाना जाना चाहिए तथा इन पुर्जों के निर्माण या बाजार/ओएफ द्वारा अधिप्राप्ति की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया जाना चाहिए। 515 एबीडब्ल्यू में कार्य आदेशों के क्रियान्वयन में विलंब के कारणों का निदान तथा समाधान करने की आवश्यकता है।
 8. ओवरहाल किए गए बीएमपी की गुणवत्ता इन्डेक्स, 2015-16 में कुछ सुधार के उपरांत भी कम था, इसमें और सुधार की आवश्यकता है।